स्नातक हिन्दी (प्रतिष्ठा) - प्रथम खण्ड

(द्वितीय पत्र - प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य)

- डॉ० मुन्ना साह
हिन्दी विभाग
जे० के० कॉलेज, बिरौल

रामचरितमानस, बालकाण्ड - दो० 213 (चौपाई - 1 से 4), 214

चौपाई - 1 से 4

(1) सुभग द्वार सब कुलिस कपाटा। भूप भीर नट मागध भाटा॥
बनी बिसाल बाजि गज साला। हय गय रथ संकुल सब काला॥

(2) सूर सचिव सेनप बहुतेरे। नृप गृह सरिस सदन सब केरे॥
पुर बाहेर सर सरित समीपा। उतरे जहँ तहँ बिपुल महीपा॥

(3) देखि अनूप एक अँवराई। सब सुपास सब भाँति सुहाई॥
कौसिक कहेउ मोर मनु माना। इहाँ रहिअ रघुबीर सुजाना॥

(4) भलेहिं नाथ कहि कृपानिकेता। उतरे तहँ मुनिबृंद समेता॥
बिस्वामित्र महामुनि आए। समाचार मिथिलापति पाए॥

प्रस्तुत पंक्तियाँ गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित प्रबंध काव्य रामचरितमानस के बालकाण्ड से अवतरित हैं। इन पंक्तियों के माध्यम से कवि ने जनकपुर, राजमहल का सौंदर्य चित्रण किया है।

तुलसीदास कहते हैं कि राजमहल के सभी द्वारों के दरवाजे सुन्दर एवं वज्र के समान मजबूत हैं। वहाँ राजाओं, नटों, मागधों एवं भाटों की भीड़ लगी रहती है। घोड़ों और हाथियों के लिए बहुत बड़ी-बड़ी घुड़शालाएँ, गजशालाएँ बनी हुई हैं। वहाँ घोड़े, हाथी एवं रथों की संख्या बहुत है। बहुत से शूरवीर, मन्त्री और सेनापति हैं। उन सबके घर भी राजमहल जैसा ही है। नगर के बाहर तालाब और नदी के निकट बहुत-से राजालोग डेरा डाले हुए हैं। वहीं पास में आमों का एक सुन्दर बाग था, जिसे देखकर विश्वामित्र जी ने कहा - 'हे सुजान रघुवीर! मेरा मन कहता है कि यहीं रहा जाय। सभी का कल्याण करने वाले कृपा के धाम श्रीराम 'बहुत अच्छा स्वामिन्' कहकर वहीं मुनियों के साथ रुक गए। जब यह समाचार कि 'महामुनि विश्वामित्र आए हैं, मिथिला के स्वामी जनक जी को मिला।

दो० 214 "संग सचिव सुचि भूरि भट भूसुर बर गुर ग्याति।
चले मिलन मुनिनायकहि मुदित राउ एहि भाँति॥

तब जनक ने 'पवित्र हृदय वाले (ईमानदार) मन्त्री, बहुत से योद्धा, श्रेष्ठ ब्राह्मण, गुरु शतानन्दजी और राजदरबार के श्रेष्ठ लोगों' को साथ लिया और प्रसन्नता के साथ राजा मुनियों के स्वामी विश्वामित्र जी से मिलने चले।

Scanned with CamScanner